प्रभात
छिपाएंगे नहीं, छापेंगे
facebook-Subharti Tv | Twitter-Subharti Tv
www.subhartimedia.com | लखनऊ, मंगलवार, 07 मई 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित | रहमतों और बरकतों का महीना रमजान | पेज:06
रमजान मुबारक

चुनावी फुलझड़ी

शराब कारोबारी ने चंदा दिया, चरणसिंह ने लौटा दिया था

लखनऊ। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह नैतिकता को बहुत महत्व देते थे। इस किस्से की शुरुआत 1977 में यूपी में हुई उनकी एक सभा से होती है। इसमें चौधरी ने मतदाताओं से कहा था कि उनकी पार्टी का प्रत्याशी अगर चारित्रिक रूप से पतित हो, शराब पीता हो या किसानों-मजदूरों से धोखा करता हो तो वे उसे हराने में संकोच न करें। 1980 में फैजाबाद जिले को टांडा तहसील के चौधरी समर्थक युवा नेता गोपीनाथ वर्मा विधानसभा चुनाव का टिकट मांगने गए तो उन्होंने टका-सा जवाब दिया, 'क्षेत्र में जाओ। यथासमय सूचित कर दिया जाएगा।' डरते-डरते वर्मा ने उनसे कहा, 'कैसे सूचित कर दिया जाएगा? प्रदेश अध्यक्ष जी ने टिकट की सूची से मेरा नाम काट कर एक शराब कारोबारी का नाम लिख दिया है।' यह सुनते ही चौधरी ने जनता पार्टी (सेक्यूलर) प्रदेश अध्यक्ष रामवचन यादव को तलब किया और गोपीनाथ का नाम काटने की वजह पूछी। यादव ने बताया मजबूरी है। शराब कारोबारी ने नौ लाख रुपये का चंदा दिया है। इस पर चौधरी बिफर पड़े और बोले, 'मजबूरी आपकी होगी, पार्टी की नहीं। आप व्यवसायी को उसके नौ लाख रुपए लौटा दें। हम किसी शराब व्यवसायी को प्रत्याशी नहीं बनाएंगे।' गोपीनाथ का टिकट पक्का हो गया और वे 52 वोटों से चुनाव भी जीत गए।

1984 में मद्रास से जीत कर संसद पहुंची थी वैजयंती माला

चैन्ने। 1984 के लोकसभा चुनाव में यूपी के इलाहाबाद से अमिताभ बच्चन, महाराष्ट्र के मुंबई में सुनील दत्त ने राजनीति में दस्तक दी तो तमिलनाडु में जानी-मानी अभिनेत्री वैजयंती माला कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रही थीं। वैजयंती माला ने कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर दक्षिण मद्रास (चेन्नई) लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा था। यहां पर उनका मुकाबला लेखक और जेएनपी के प्रत्याशी इरा सेजियान सहित 13 अन्य प्रत्याशियों से था। सेजियान ने चुनाव प्रचार के दौरान वैजयंती के खिलाफ कई भड़काऊ बयान भी दिए। वे कहते थे- 'मुझे लोकसभा भेजो और इन्हें (वैजयंती माला) आर.आर. सभा भेजो।' दरअसल आर.आर. सभा फाइन आर्ट को प्रमोट करने वाला संगठन था। इस चुनाव में 3,36,353 वोट पाकर वैजयंती माला संसद पहुंचने में कामयाब रही थीं। सेजियान को 2,88,336 वोट मिले थे। वैजयंती माला ने 1989 का लोकसभा चुनाव भी इसी सीट से लड़ा। इस बार उनका मुकाबला डीएमके के अलादी अरुणा से था। वैजयंती माला को 51.92% वोट मिले और उन्होंने अलादी को हरा दिया। 1993 में उन्हें राज्यसभा से संसद भेजा गया। छह साल बाद उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और सितंबर 1999 में भाजपा ज्वाइन कर ली।

कांग्रेस का गोद लिया किशोर फिर सड़कों पर

भोपाल। 25 अप्रैल 2013 को भोपाल दौरे पर आए राहुल गांधी की मुलाकात अखबार बेचने वाले 10 वर्षीय कौशल शाक्य से रोशनपुरा चौराहे पर हुई थी। इस मुलाकात से सुर्खियों में आए कौशल को कांग्रेस ने गोद लिया था। वादा किया था कि कौशल की शिक्षा और उसके परिवार के लिए नौकरी की व्यवस्था की जाएगी। 6 साल बाद आज कौशल 16 साल का है लेकिन उसके जीवन में बहुत फर्क नहीं आया। अंतर सिर्फ इतना ही आया कि तब वह अखबार बेचता था अब भोपाल के न्यू मार्केट के फुटपाथ पर बैग बेचने वाली दुकान पर काम कर रहा है। घर में पिता बीमार है। मां, बड़ा भाई दुलीचंद और कौशल दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कौशल कहता है 'राहुल गांधी के कहे अनुसार बिलंगा स्थित राजीव गांधी हायर सेकंडरी स्कूल में पढ़ने गया, लेकिन फीस पहुंच से बाहर थी।' इसके बाद तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रही स्मृति ईरानी का पत्र भी कौशल के पास आया कि उसकी पढ़ाई केंद्रीय विद्यालय में कराई जाएगी, खर्चा सरकार उठाएगी। कौशल पत्र को लेकर केंद्रीय विद्यालय गया तो वहां भी फीस आड़े आ गई।

पूर्वी यूपी में ज्यादा मजबूत हैं मोदी
कांग्रेस बिगाड़ रही गठबंधन का खेल

प्रभात ब्यूरो

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के पांचवे चरण में यूपी की 14 सीटों पर मतदान संपन्न हो गया है। इस चरण के साथ ही अब पूर्वी यूपी की 40 सीटों को जीतने के लिए चुनावी जंग अंतिम दौर में है। बीजेपी का गढ़ समझे जाने वाले पूर्वी उत्तर प्रदेश में धरातल पर पश्चिमी यूपी की अपेक्षा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ज्यादा मजबूत नजर रहे हैं, वहीं कांग्रेस पार्टी एसपी-बीएसपी गठबंधन के उम्मीदवारों का खेल बिगाड़ती दिख रही है। सोमवार को मतदान संपन्न होने के बाद बीजेपी नेताओं का दावा है कि पूर्वी यूपी में इस बार पार्टी पहले की अपेक्षा बेहतर प्रदर्शन करेगी। उनका कहना है कि मतदाताओं में पीएम मोदी को लेकर अच्छी भावना है और प्रियंका गांधी के वाराणसी में चुनाव नहीं लड़ने के ऐलान के बाद विपक्षी खेमे में भ्रम है। बीजेपी ने कहा कि कई सीटों पर कांग्रेस पार्टी गठबंधन की मदद कर रही है। हालांकि बीजेपी के इस आरोप का अखिलेश यादव खंडन करते हैं। बीजेपी नेता चाहे जो दावा करें लेकिन इस बार वर्ष 2014 की अपेक्षा चुनावी गणित अलग है। इसकी सबसे बड़ी वजह एसपी-बीएसपी गठबंधन है।

बीजेपी के लिए पूर्वी यूपी के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पीएम मोदी कुल 15 रैलियां इस क्षेत्र में करेंगे जो पश्चिमी यूपी से ज्यादा है। अखिलेश यादव और मायावती पूरे प्रदेश में कुल 11 संयुक्त रैलियां कर रहे हैं। पीएम मोदी के इस धुआंधार प्रचार के कारण गठबंधन के नेताओं को भी पूर्वी यूपी पर अपना फोकस करना पड़ा है। अगर जमीनी हकीकत की बात करें तो कांग्रेस पार्टी बीजेपी की अपेक्षा गठबंधन को नुकसान पहुंचाती दिख रही है। पूर्वी यूपी से राजनीति के ज्यादातर सूरमा मैदान में हैं। इनमें राहुल गांधी, सोनिया गांधी, मेनका गांधी, वरुण गांधी, पीएम मोदी, राजनाथ सिंह, अखिलेश यादव शामिल हैं। अमेठी में राहुल गांधी को बीजेपी उम्मीदवार स्मृति इरानी से कड़ी टक्कर मिल रही है।

बीजेपी गोरखपुर की सीट को फिर से पाने के लिए बेताब है जो उसके लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गई है। माना जा रहा है कि पिछले उपचुनाव के विपरीत निषाद समुदाय इस बार यहां बीजेपी के साथ है। पूर्वी यूपी की संत कबीर नगर, बांदा, बाराबंकी और मोहनलालगंज में त्रिकोणीय मुकाबले के आसार दिखाई पड़ रहे हैं। हालांकि संत कबीर नगर में बीजेपी बढ़त पर है जहां से प्रवीण निषाद चुनावी मैदान में हैं। बाराबंकी में कांग्रेस नेता पीएल पुनिया के बेटे गठबंधन के प्रत्याशी को नुकसान पहुंचा रहे हैं। पूर्वी यूपी में कुछ सीटें बीजेपी आसानी से निकाल सकती है। इसमें बलिया सीट भी शामिल है जहां से पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के बेटे नीरज शेखर मैदान में हैं। कांग्रेस का यहां पर कोई प्रत्याशी नहीं है। बीजेपी देवरिया में अच्छा प्रदर्शन कर रही है जहां से उसने शरद त्रिपाठी का टिकट काटकर उनके पिता रमापति राम त्रिपाठी को टिकट दिया है। डुमरियागंज में कांग्रेस जगदंबिका पाल और गठबंधन के आफताब आलम के बीच लड़ाई से बीजेपी को फायदा हो सकता है।

कांग्रेस को उम्मीद है कि कुशीनगर सीट पर आरपीएन सिंह चुनाव जीत सकते हैं लेकिन गठबंधन के उम्मीदवार से उन्हें कड़ी टक्कर मिल सकती है। बस्ती में भी त्रिकोणीय लड़ाई के आसार हैं लेकिन अब पीएम मोदी की रैली के बाद यहां समीकरण बदल सकता है। बता दें कि पिछले चुनाव में पूर्वी यूपी की 40 में से 35 सीटों पर बीजेपी ने कब्जा किया था। उसे करीब 39.33 फीसदी वोट मिले थे।

पूर्वी यूपी में बीजेपी के राष्ट्रवाद की गूंज कांग्रेस के न्याय योजना से ज्यादा सुनाई देती है। पश्चिमी यूपी में जहां ज्यादातर लोगों को न्याय योजना के बारे में पता नहीं था लेकिन पूर्वी यूपी में कई लोगों को इस स्कीम के बारे में जानकारी थी। हालांकि उन्हें विश्वास नहीं है कि कांग्रेस के जीतने पर उन्हें 72 हजार रुपये मिलेगा। लोगों में यही भरोसा दिलाने के लिए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम इस सप्ताह महाराजगंज में थे। उधर, गठबंधन का दावा है कि आवारा पशुओं की समस्या के कारण पूर्वी यूपी में बीजेपी के खिलाफ अंडर करंट चल रहा है। पूर्वी यूपी से राहुल गांधी और पीएम मोदी दोनों ही चुनाव लड़ रहे हैं लेकिन प्रधानमंत्री के विपरीत कांग्रेस अध्यक्ष का प्रभाव केवल अमेठी और रायबरेली तक सिमटकर रह गया है।

बीजेपी का खेल बना-बिगाड़ सकती हैं 5 वें चरण की सीटें

प्रभात ब्यूरो

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के 5वें चरण में यूं तो 51 सीटों पर ही मुकाबला है लेकिन दिल्ली की कुर्सी की जंग के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण चरण है। बीजेपी के लिए यह चरण तो काफी अहम है। 2014 के चुनाव में बीजेपी ने इन 51 सीटों में से 40 पर जीत दर्ज की थी जबकि कांग्रेस को सिर्फ दो सीटों पर जीत मिली थी। ऐसे में बीजेपी के लिए यहां काफी कुछ दांव पर लगा है।

पांचवें चरण में यूपी की 14, पश्चिम बंगाल की 7, बिहार की 5, झारखंड की 4 और जम्मू-कश्मीर की दो सीट पर वोट डाले गए। इसके अलावा राजस्थान और मध्य प्रदेश की भी सीटों पर मतदान हुआ। राजस्थान और मध्य प्रदेश दोनों ही जगह विधानसभा चुनाव में बीजेपी सरकार बनाने से चूक गई थी, ऐसे यहां बीजेपी के लिए आर या पार की लड़ाई है। इन सीटों में ज्यादातर पर बीजेपी और कांग्रेस में सीधी टक्कर है। पीएम मोदी के जबरदस्त प्रचार ने इन सीटों पर मुकाबला रोचक बना दिया है। पांचवें चरण में राजस्थान की 25 में से 12 सीटों और मध्य प्रदेश की 29 में से 7 सीटों पर चुनाव सोमवार को हुआ।

2014 में जहां राजस्थान में बीजेपी ने सारी सीटें जीती थीं तो वहीं मध्य प्रदेश में मात्र 2 सीटों पर चूक गई थी। पांचवें चरण के चुनाव के साथ राजस्थान की सभी सीटों पर मतदान पूरा हो गया जबकि मध्य प्रदेश में एक राउंड और होगा। इसके अलावा पूर्वी यूपी की कुछ महत्वपूर्ण सीटों पर पांचवें, छठें और सातवें चरण की लड़ाई यह तय करेगी कि एसपी-बीएसपी गठबंधन बीजेपी की जीत का पहिया रोकती है या फिर पीएम नरेंद्र मोदी का हिंदुत्व प्लस विकास का दांव भारी पड़ता है। इस चरण में सोनिया गांधी के गढ़ रायबरेली और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की अमेठी में भी मतदान हो रहा है। एसपी-बीएसपी ने इन दोनों सीटों पर कांग्रेस को समर्थन दिया है। आइए एक नजर डालते हैं, अलग-अलग राज्यों के चुनावी समीकरण पर- पांचवें चरण में उत्तर प्रदेश में अवध क्षेत्र में मतदान हुआ जहां बीजेपी और कांग्रेस की लड़ाई की बड़ी तस्वीर सामने है।

14 सीटों में बीजेपी ने 2014 में 12 सीटें जीती थीं। सिर्फ रायबरेली और अमेठी में ही बीजेपी चूक गई थी। वहीं 2009 में कांग्रेस ने 14 सीटों में से 7 सीटें जीती थीं। इस बार कांग्रेस ने न सिर्फ दो सीटों पर बल्कि धौरहरा, बाराबंकी, फैजाबाद और सीतापुर में भी बीजेपी को कड़ी टक्कर दी बल्कि अमेठी में राहुल गांधी को स्मृति इरानी व रायबरेली में सोनिया के सहयोगी रह चुके दिनेश सिंह ज्यादा मजबूत नहीं हैं। लखनऊ में केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह का मुकाबला गठबंधन की प्रत्याशी पूनम सिन्हा से हुआ। वहीं रिजर्व सीट मोहनलालगंज में बीजेपी के मौजूदा सांसद कौशल किशोर के सामने गठबंधन से सीएल वर्मा और कांग्रेस से आरके चौधरी रहे। फैजाबाद में बीजेपी सांसद लल्लू सिंह, गठबंधन के प्रत्याशी आनंद सेन और कांग्रेस के निर्मल खत्री के बीच मुकाबला रहा है।

भाजपा को ज्यादा पुख्ता रणनीति के तहत उतरना पड़ा

प्रभात ब्यूरो

लखनऊ। कहते हैं कि नई दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश होकर जाता है और देश की राजनीति के इस केंद्र पर कब्जे के लिए सत्ताधारी बीजेपी को वर्ष 2014 की अपेक्षा ज्यादा पुख्ता रणनीति के साथ मैदान में उतरना पड़ा है। बीजेपी की 5 सदस्यीय टीम खामोशी से मिशन में जुटी हुई है। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा भी राज्य में पार्टी के बेहतर प्रदर्शन के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं।

पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 80 में से 71 सीटों पर कब्जा किया था लेकिन इस बार उसे एसपी-बीएसपी गठबंधन से कड़ी टक्कर मिल रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उत्तर प्रदेश बीजेपी की नाक है। सीटों के लिहाज से देश के सबसे बड़े राज्य में बीजेपी ने जोरदार प्रदर्शन करके पूरे देश को चौंका दिया था। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने यूपी में 80 में से 71 सीटों पर जीत हासिल करके नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने का रास्ता साफ कर दिया था। बीजेपी के अलावा उसकी सहयोगी अपना दल को भी दो सीटें मिली थीं। इस तरह यूपी में एनडीए को 73 सीटें मिली थीं। वर्ष 2019 में स्थिति पिछले चुनाव की अपेक्षा काफी अलग है। दशकों तक एक-दूसरे की धुर-विरोधी रही एसपी और बीएसपी एकसाथ आ गई हैं और उन्होंने आरएलडी के साथ गठबंधन बनाया है। इस महागठबंधन ने अब यूपी में बीजेपी के लिए करो या मरो की स्थिति पैदा कर दी है।

इस महाचुनौती से निपटने के लिए बीजेपी ने अपनी 5 सदस्यीय टीम को मोर्चे पर लगा दिया है जो चुपचाप और पूरी रणनीति के साथ काम कर रही है ताकि भगवा पार्टी यूपी में अपना स्थान बनाए रखने में सफल हो जाए। बीजेपी की इस चुनावी टीम को भरोसा है कि उत्तर प्रदेश में पार्टी पूरे देश को सुखद आश्चर्य में डाल देगी। बीजेपी के चुनावी रणनीतिकारों में शामिल संघ के एक वरिष्ठ नेता ने जोर देकर कहा, बीजेपी एक यथार्थवादी पार्टी है। हम जानते हैं कि वर्ष 2014 की तरह पार्टी शानदार प्रदर्शन नहीं करने जा रही है लेकिन वर्ष 2019 में भी हमारा चुनाव परिणाम ऐसा नहीं होगा जिसे कोई हल्के में ले सके। बीजेपी की इस पांच सदस्यीय टीम में सुनील बंसल (मोदी की तरह पूर्णकालिक प्रचारक रहे), बीजेपी के दलित नेता और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दुष्यंत गौतम, मध्य प्रदेश के नेता डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा, गुजरात के गोरधन झड़फिया और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ शामिल हैं।

यह टीम रणनीति बनाती है और इसकी रिपोर्ट सीधे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह को भेजती है। टीम में शामिल एक सदस्य कहते हैं, यूपी में इस बार हमारे लिए सब आसान नहीं है। दिसंबर से जिस तरीके से हमने काम किया है, हमें विश्वास है कि यहां पर हम अच्छा परिणाम देने में सफल रहेंगे। आरएसएस के नजदीकी एक और टीम मेंबर ने कहा, हमारी नियुक्ति के साथ ही हमारी चुनावी रणनीति शुरू हो गई थी। हम जानते हैं कि अमितभाई ने हमें चुना है और किसलिए चुना है। गोरधन झड़फिया के नेतृत्व में इन सदस्यों को यूपी की जातिगत राजनीति को ध्यान में रखकर चुना गया है। यूपी में हार्दिक पटेल फैक्टर को खत्म करने के लिए पाटीदार नेता गोरधन झड़फिया को चुना गया। सारे दलित मायावती के पाले में न चले जाएं इसके लिए राजस्थान के बीजेपी नेता दुष्यंत गौतम को लाया गया। अपर कास्ट को साधने के लिए डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा को चुना गया।

इन दिनों यूपी में छोटे मोदी कहे जा रहे सुनील बंसल को टीम का मेंबर बनाया गया। ये चारों लोग जहां बीजेपी के गैरपरंपरागत वोट बैंक को अपने साथ लाने के लिए रणनीति बना रहे हैं वहीं योगी आदित्यनाथ हिंदू वोट बैंक को पार्टी के साथ लाने पर काम कर रहे हैं। चुनाव में जीत सुनिश्चित करने के लिए आरएसएस ने भी अपनी पूरी ताकत लगा दी है। बीजेपी ने राज्य की 80 सीटों को जोन में बांट दिया है। राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, किसानों की बदहाली, जल संकट, जाति और बेरोजगारी, ये छह मुद्दे निर्धारित किए गए हैं। इसके बाद इन मुद्दों को हर सीट के साथ जोड़कर उसे नक्शे पर निशान लगाया गया है। स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं को इस बात के लिए ट्रेनिंग दी गई है कि वे इन मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाएं। बीजेपी पेशेवर शोधकर्ताओं की मदद से हरेक सीट का सर्वे किया है।

राजनाथ सिंह ने गोमती नगर में परिवार संग किया मतदान

वोट देकर बाहर निकलती बसपा सुप्रीमो मायावती

मतदान के लिए अपनी बारी का इंतजार करते डीजीपी ओपी सिंह

पत्नी के साथ वोट डालने पहुंचे यूपी डीजीपी ओपी सिंह

अपर मुख्य सचिव अवनीश अवस्थी ने बेटे व पत्नी मालिनी अवस्थी संग किया मतदान

पत्नी के साथ वोट देने जाते भाजपा प्रदेश महामंत्री पंकज सिंह

सीएमएस स्कूल में वोट देकर निकलते मंत्री बृजेश पाठक व पत्नी

एसएमएस लखनऊ के महानिदेशक प्रो.भरत राज सिंह ने पत्नी के साथ डाला वोट